International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182, Print ISSN: 2349-5979, Impact Factor: RJIF 5.72
www.allsubjectjournal.com
Volume 3; Issue 10; October 2016; Page No. 222-224

सांझी

[1] नीतू खतरी, [2] डॉ0 बी0 एस0 गुलिया

[1] शोधार्थी, ललित कला विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा, भारत।
[2] प्रोफेसर, ललित कला विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा, भारत।

सारांश
शेली के अनुसार : ''कला, कल्पना की अभिव्यक्ति है।'' कलाकार द्वारा कल्पित रचना कलाकृति कहलाती है। कलाकृति में भावों की अभिव्यक्ति निहित रहती है। कला में रेखाओं का विशेष महत्व होता है। भारतीय रेखाओं में बाह्य सौन्दर्य के साथ–साथ गम्भीर से गम्भीर भाव भी बड़ी कुशलता से व्यक्त किए जाते हैं। इनके द्वारा गोलाई, स्थिति व परिपेक्ष्य आदि सब कुछ प्रदर्शित किया गया है। कला के द्वारा मानव के मस्तिष्क की उपज व कल्पना शक्ति को चित्रभूमि उतारा जाता है। इस तरह के अभिव्यंजित क्रिया–कलाप कलाकृति की अर्ध गरिमा को परिभाषित करते हैं। मानव मन की मूल–भूत उपज व उसके द्वारा किये गये कार्य को कल्पना के माध्यम से चित्रभूमि पर स्वरूपवद्ध किया जाता है।
यद्यपि लोक कलाकारों को कला के सिद्धांतों का ज्ञान नहीं होता, फिर भी उनकी कलाकृतियां बड़ी रूचीकर एवं मनमोहक होती है। धरती के कण–2 में यह कला लोकजीवन में पूरी तरह रच गई है।लोक जीवन का कोई पहलू इससे अछूता नहीं है।
लोक कला में धर्म कूट–कूट कर भरा हुआ है। धर्मानुप्राणित होने के कारण लोक कला में अध्यात्मिक शक्ति का समावेश है जिसके कारण सराज में इसे आदर, भाव, श्रद्धा तथा उपासना की दृष्टि से देखा जाता है।
जीवन में भय की भावना का मानव के लिए महत्वपूर्ण अर्थ रहता है। जिसके कारण लोक कला के माध्यम से देवी देवताओं के प्रतीको की पूजा की जाती है। जिसके कारण हरियाणा भारतीय संस्कृति की विकास भूमि के रूप में प्रसिद्ध है। आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से शारदीय नवरात्रि आरम्भ होते हैं और इन दिनों कन्याएं दीवार पर मानव आकार की सांझी तैयार करती है। इसे दुर्गा मानकर पूजा की जाती है।

मूल शब्दः सांझी, कला, कलाकृति

प्रस्तावना

सांझी

हरियाणा लोक कला सम्पन्न प्रान्त है। यह प्रान्त अपनी संस्कृति एवं कला के लिए विख्यात है। वैसे तो 1966 से पूर्व हरियाणा एवं हिमाचल भी पंजाब के ही अंग थे। अतः पंजाब की लोक कला भी हरियाणा लोक कला से अधिकतर साम्य रखती है। इसके भारतवर्ष में विभिन्न प्रमुख पर्वो दीपावली, दशहरा में भी लोक कला से सहज दर्शन हो जाते हैं।
सांझी को हरियाणा में पर्व के रूप में मनाते है। सांझी हरियाणा की लोक कला का अनूठा उदाहरण है। सांझी का निर्माण दीवार पर गोबर–मिटटी द्वारा किया जाता है। लड़कियां सांझी की कला में विशेष रूचि एवं निपुणता दिखाती है। सांझी लोक कला का अनूठा नमूना होती है।'' गोबर की इस लोक कला में लडकियां अपनी कला का चमत्कार प्रस्तुत करती है। 'सांझी' माता का मुंह, उसका गहनों से भरा माथा, एक ओर चांद और दूसरी और छिपता सूरज बनाकर लोक कला की सारी प्रतिभा जीवित हो जाती है। अविवाहित लड़कियां प्रत्येक शाम को सांझी माई की पूजा के लिए एकत्र होती है और सांझी के गीतों को गाती है। आरती के उपरांत उसके सम्मुख घी का दीया जलाया जाता है तथा शक्कर और चावल मिलाकर प्रसाद तैयार किया जाता है। इसी सन्दर्भ में सांझी के पर्व की महता दर्शाना यहां समीचीन प्रतीत होता है।'' दशहरे के दिन हरियाणा में बालिकाएं सांझी माई की मूर्ति और जौं को गांव के किसी तालाब में तेरा आती है। लोक विश्वास है कि यदि इसे 'गौराजा के बाग के किसी तालाब में डाला जाए तो, उस वर्ष वर्षा की कोई कमी नहीं होती। सांझी के अनेक गीत प्रचलित है, जिन्हें लड़कियां इस अवसर पर गीत गाती है। जोकि परम्परागत चलते रहते है।

सांझी के गीत

अश्विन मास के शुक्ल पक्ष के आरम्भ में नों दिन अर्थात् नवरात्रों के दिनों में देवी की विशेष पूजा की जाती है। सांझी की पूजा भी इन्हीं दिनों में होती है। सांझी देवी सभी की सांझी देवी मानी जाती है। शोधार्थी के अनुसार इन्हीं दो कारणों से इस देवी का नाम सांझी देवी पड़ा है। इसकी पूजा बालिकाओं द्वारा की जाती है। 'इसकी स्थापना घर की किसी दीवार पर की जाती है। स्थापना से पूर्व ही मिट्टी प स्थापित किया जाता है।'[1]
इसका खूब श्रृंगार किया जाता है। पास–पड़ोस की सभी बालिकाएं प्रतिदिन नैवेद्य आदि से इसकी पूजा करती हैं। सांझी में देवी की भावना निहित है[2]। हरियाणा में यह पर्व लड़कियों द्वारा ही विशेष रूप से मनाया जाता है। 'सांझी–देवी' की पूजा के लिए प्रत्येक सन्ध्या को लड़कियां देवी की प्रतिमा के सामने बैठकर गीत गाती है। पूजा के इस पर्व को लडकियां स्वनिर्मित अथवा गांव की वृद्ध महिलाओं से सीख हुए गीतों सहित मनाती हैं जैसे –

[1] डॉ0 शंकर लाल यादव, हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य, पृ0 238
[2] डॉ0 श्याम परमार, मालवी लोक साहित्य, पृ0 157

गीत नं0 1

मेरी सांझी के औरै धोरै फूल रही कव्वाई।
भान मैं तनै बूझूं संझां कैं तेरे भाई।।
मेरे पांच पचास भतीजे नौ दस भाई।
भान कैयां का ब्याह रचाया कितने की सगाई।।
पंचा का तो ब्याह रचाया दसां की सगाई।

गीत नं0 2

डूंगी सी डाबर कै फूला की महकार
लीला सा घोड़ा रे कौन करै अवसार
के मैं सूं चन्दा हे संझा का लणिहार
आ मेरे माई जाये के बैठो तख्त बिछाय
थारे घोड़िया ने दाना रे तमने रस भर खीर

गीत न0 3

हे मेरी सांझी
तेरी चम्मा फूली आंगी कुरबान सांझी
हे मेरा सुसरा
तेरी डाढी लिगडा कचरा कुरबान सांझी
हे मेरी सासू
तेरे गिण गिण तोडूं पांसू कुरबान साझी
हे मेरी नणदी
तेरी तोड़ घड़ा लूं अणदी कुरबान सांझी

गीत न0 4

साझी चली सांझा नै
गैल बसंता पूत
और सब चीज सिर धरी
बगल में माता सूत

गीत न0 5

जाग सांझी जाग तेरे मात्थे लाग्या भाग
पीली–पीली पटिट्यां सदा सुहाग
मेरी सांझी के औरे धौरे चोल्यों की मुट्ठी हे
मैं तनै बुज्झूं संजा तेरी कैं तोल्यां की गुट्ठी हे
हे मेरे बाप घड़ाई बहना बीरण मोल चुकाई
बेबे नौ तोल्या की गुट्ठी हे

गीत न0 6

आरता हे आरता सांझी माई तेरा आरता,
आरते के फूल झलेवन बेल,
इतने से भाईयां में कुणसा गोरा।
चंद गोरा सूरज गोरा,
गोरा के नयण काजल भर गेरे।।

यहां 'सांझी' को 'सौभाग्य–देवी' का प्रतीक मानकर उपासना की गई है। 'सांझी–गीतों' में लड़कीयां 'सांझी–मां' में उसके भाई और भतीजों के विषय में पुछती है। सांझी उतर देती है कि उसके 16 भाई और 7–8 भतीजे है दूसरे गीत में सांझी के सौभाग्य और भाई की दीर्घायु की कामना व्यक्त करती है। गीतों में याचना और साथ ही उनकी पूर्ति का विवरण भी प्राप्त है। आठ्य के दिन सांझी के साथ भाई को दीवार पर बनाया जाता जो कि इस लोक संस्कृति की परम्परा है कि भाई बहन को लेने आ चुका है तथा वह नौंवी के दिन बहन सांझी के घर रूकता है तथा दशहरे के दिन सांय को सभी बलिकाएं उसे दीवार पर उतार कर विशेषकर उसके मुख को एक कुल्हड़ी में रखकर तालाब में विसर्जित करने जाते हैं किन्तु नवयुवक उसे जल में विसर्जित नहीं करने देजे हैं। यद्यपि कन्याएं बहुत प्रयास करती है कि किसी न किसी तरह वे उसे जल में विसर्जित करें किन्तु पाली अपनी लाठियों द्वारा उस कुल्हड़ी को फोड़ देते हैं। उनका पहले तो यह प्रयास होता है कि वह तालाब तक ही न पहुंचे यदि तालाब तक पहुंच गई तो उसे अधिक दूरी तक तैरने नहीं देते, लाठियों या पत्थरों से उसे डूबों देते हैं।

हरियाणा के पालियों में एक लोक विश्वास है कि यदि सांझी का मुख तैरकर तालाब में दूर तक चला गया या तालाब के पार हो गया तो बहुत भंयकर अकाल पड़ेगा। इसलिए इसे वे पार नहीं उतरने देते हैं। बालिकाएं सांझी को मातृरूप में पूजती हैं। सुबह शाम आरती करती हैं। सांझी से लोक जीवन में एकरूपता आ जाती है।

सांझी किसी एक प्रदेश की अपनी नहीं है। इसको अलग–2 राज्यों में अलग–2 नाम से पुकारा जाता है, कहीं सुंजली, तो कहीं सांजुली सिंझा, साझलदे, संझया, हंज्या, हांझी। हरियाणा प्रदेश में ही भिवानी के कुछ इलाकों में उसे संझाया, रोहतक, हांसी में सांझी, हिसार के आसपास बिशनोई इलाके में हंझया आदि नामों से पुकारा जाता है। सम्भवतः कन्याएं इसे देवी मानकर इसकी पूजा करती हैं और अपने भविष्य की मंगल कामना करती हैं। 'क्वार मास में सांझी मांडी जाती है। इसे दुर्गा का रूप मानते हैं बालिकाओं की यह धारणा है। बालिकाएं इसे मातृरूप में पूजती हैं इसे सन्ध्या माता भी कहा जाता है।[3] डॉ0 सत्या गुप्ता इसका सम्बन्ध रम विजय से भी जोड़ती है। खड़ी बोली क्षेत्र के गांवो में नवरात्रों में लड़कियां मिट्टी के सितारों व मिट्टी के गहनों को खड़िया व रामरज से पोत कर एक दीवार पर एक नारी मूर्ति का श्रृंगार करती है। इस मूर्ति को सांझी के नाम से पुकारा जाता है। 'इस दुर्गा को संझा मानकर पूजा जाता है।[4] मोहल्ले की सभी कन्याएं संध्या को इकट्ठी होकर इसकी आरती करती है कुछ इलाकों में इसका सम्बन्ध रामविजय से भी लिया जाता है।[5] डॉ0 महेन्द्र मानावत के अनुसार इसे देवी स्वरूप कहा गया है– सांझी संध्या का एक विकृत रूप है। यह सिवासन युवतियों द्वारा मनाया जाता है। इसमें भगवान पार्वती की भगवान शंकर को पति रूप में प्राप्त करने की अराधना सम्मिलित होती है। भगवान शंकर का वाहन वृषभ है। अतः उसके प्रति स्नेह प्रदर्शित करना भी परम आवश्यक है। चन्द्रमा, सूर्य, गंगा, बिच्छू, वृक्ष, देवालय, नारी आदि का चित्रण प्रतीकात्मक है। इन सब में पार्वती की साधना प्रतिबिम्बित हुई है।[6]इसका सम्बन्ध चाहे राधा कृष्ण से जोड़े राम की विजय से, किन्तु यह बालिकाओं का पर्व, उसे कन्याएं ही मनाती हैं। इसमें नारी की आकृति प्रधान और पूजनीय हैं। कुछ लोगों की धारणा सांझी के प्रति गलत होती है।लेकिन बालिकाएं तो इसे अपनी माता सांझी के श्रृंगार के लिए सभी उपकरण जुटा देती है।[7]

---

[3] डॉ0 शंकर लाल यादव, हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य, पृ0 238
[4] हरिगंधा, हरियाणा साहित्य अकादमी का साहित्यिक पत्रिका, नवम्बर–दिसम्बर, 1989, पृ0 61
[5] डॉ सत्या गुप्ता, खड़ी बोली का लोक साहित्य, पृ0 372
[6] डॉ0 महेन्द्र मानावत, राजस्थान की संझया, भारतीय लोक कला मण्डल, उदयपुर प्र0 सं0 (1977), पृ0 150
[7] डॉ0 श्याम परमार, मालवी लोक साहित्य, पृ0 150

हरियाणा के गांवो में सांझी के उपलक्ष्य में गाए जाने वाले गीतों में सांझी मातृ स्वरूप झलकता है। इसे एक सखी के रूप में माना जाता है। इसकी विदाई पर अर्थात विर्सजन के समय के गीता तो बरबस कालीदास के शकुन्तला के विदाई समारोह की याद दिला रहे हैं।

कहीं–2 सांझी के साथ दो ओर भी आकृतियां बनाई जाती हैं। एक आकृति घोड़े की होती है तथा दूसरी धूंधा की होती है। धूंधा को मोटी, कुरूप और बेड़ोल बनाया जाता है। ताकि सांझी का सौन्दर्य बढ़ा चढ़ा कर दिखाया जा सके और गीतों के बीच में हास्य रस की सृष्टि करने के लिए धुंधा के स्वरूप पर फब्तियां कसी जा सके और मजाक किया जा सके। कहीं–कहीं सांझी के साथ डूम और डूमकी भी बनाए जाते हैं। माना जाता है कि ये पीहर से सांझी के साथ आए थे।

डॉ0 महेन्द्र भानावत के अनुसार सांझी को राजस्थान की देन माना है।[8] इसकी पुष्टि में डॉ0 महेन्द्र भानावत ने बगडावत लोक गाथा का उल्लेख भी किया है जोकि रानी लक्ष्मी कुमारी चूडावत से उपलब्ध हुई है।

इस लोक गाथा के आधार पर सांझी नामक बालिका निम्न जाति की मानी जाती है। इसकी जाति बलायण है। इसके साथ खड़े ब्राह्मण के स्वर्ग से गराडिए ब्राह्मण पैदा हुए हैं।[9]

शोधार्थी के अनुसार सांझी की लोक कला का प्रारम्भ हरियाणा में ही हुआ होगा क्योंकि हरियाणा प्रदेश का जिकर वेदों में भी आया तथा सांझी की लोक कला किसी एक प्रदेश की न होकर हर प्रदेश की सांझी लोक कला का परम्परागत धार्मिक उदाहरण है।[10]

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अग्रवाल, एस.डी.; हरियाणा : सामान्य ज्ञान; रमेश पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली; 1995।
2. यादव, के0सी0; हरियाणा : ऐतिहासिक सिंहावलोकन।
3. संगवान, गुणपाल; हरियाणावी लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन।
4. शर्मा, पूर्णचन्द; हरियाणा की लोकधर्मी नाट्य परम्परा।
5. सिंह, विजयेन्द्र, हरियाणा के सांगों में सौन्दर्य निरूपण।
6. मंगल', लालचन्द्र गुप्त; हरियाणा का लोक साहित्य।
7. यादव, के0सी0; हरियाणा : इतिहास का लोक साहित्य।
8. शारदा, साधुराम; हरियाणाः एक सांस्कृतिक अध्ययन; प्राक्कथन।
9. प्रभाकर, देवीशंकर; हरियाणाः एक सांस्कृतिक अध्ययन।
10. आचार्य, भगवानदेव; वीर भूमि हरियाणा।
11. भान, सूरज; हरियाणा का सनत साहित्य।
12. धनकर, रीता; हरियाणा का लोक संगीत।
13. लाल, उषा; हरियाणा की हिन्दी कहानी।
14. 'मानव', रामनिवास; हरियाणा में रचित सृजनात्मक हिन्दी साहित्य।
15. पूनियां, महासिंह; हरियाणा के हिन्दी प्रबन्धकाव्य।
16. समकालिन कला, ललित कला अकादमी की पत्रिका, नवम्बर 1986 / मई 1987
17. यादव शंकर लाल, हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य।
18. परमार श्याम, मालवी लोक साहित्य।
19. मानावत महेन्द्र, राजास्थान की संझया।

[8] डॉ0 महेन्द्र मानावत, राजास्थान की संझया, पृ0 8

[9] वही, पृ0 11

[10] डॉ0 श्याम परमार, मालवी लोक साहित्य, पृ0 157